

रविवार 24 अक्टूबर, 2021

विषय — मृत्यु के बाद की प्रक्रिया

स्वर्ण पाठ: रोमियो 6 : 4

" ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुएों में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।"

उत्तरदायी अध्ययन: 1 कुरिन्थियों 15 : 19-23, 26-28

- 19 यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं॥
- 20 परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ।
- 21 क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुएों का पुनरुत्थान भी आया।
- 22 और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।
- 23 परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से; पहिला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग।
- 26 सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है।
- 27 क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके आधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है, कि जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, वह आप अलग रहा।
- 28 और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके आधीन हो जाएगा जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया; ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 25 : 1 (प्रति 3rd ;), 6-8

- 1 हेयहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूंगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने आश्चर्यकर्म किए हैं, तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियां की हैं।
- 6 सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये ऐसी जेवनार करेगा जिस में भांति भांति का चिकना भोजन और निथरा हुआ दाखमधु होगा; उत्तम से उत्तम चिकना भोजन और बहुत ही निथरा हुआ दाखमधु होगा।

- 7 और जो पर्दा सब देशों के लोगों पर पड़ा है, जो घूंघट सब अन्यजातियों पर लटका हुआ है, उसे वह इसी पर्वत पर नाश करेगा।
- 8 वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभी के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है॥

2. मत्ती 4 : 23

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

3. मत्ती 5 : 1-12

- 1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
- 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,
- 3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
- 4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।
- 5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
- 6 धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।
- 7 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।
- 8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
- 9 धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
- 10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
- 11 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।
- 12 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥

4. मत्ती 7 : 24-29

- 24 इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाई ठहरेगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया।
- 25 और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नेव चट्टान पर डाली गई थी।
- 26 परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाई ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया।

- 27 और मैं बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया॥
- 28 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई।
- 29 क्योंकि वह उन के शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की नाई उन्हें उपदेश देता था॥

5. यूहन्ना 10 : 7 (प्रति 1st), 10 (मैं)

- 7 तब यीशु ने उन से फिर कहा।
- 10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।

6. यूहन्ना 12 : 46, 49, 50 (प्रति:)

- 46 मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।
- 49 क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या क्या कहूं और क्या क्या बोलूं
- 50 और मैं जानता हूं, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है॥

7. मत्ती 26 : 1-4

- 1 जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा।
- 2 तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसह का पर्व होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।
- 3 तब महायाजक और प्रजा के पुरिनए काइफा नाम महायाजक के आंगन में इकट्ठे हुए।
- 4 और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें।

8. यूहन्ना 18 : 14

- 14 यह वही काइफा था, जिस ने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुरुष का मरना अच्छा है।

9. यूहन्ना 19 : 16 (और वे)-18 (प्रति 1st), 41, 42

- 16 तब वे यीशु को ले गए।
- 17 और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता।
- 18 जहां उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया।

- 41 उस स्थान पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिस में कभी कोई न रखा गया था।
- 42 सो यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी॥

10. यूहन्ना 20 : 1, 12-14, 17

- 1 सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा।
- 12 दो स्वर्गदूतों को उज्ज्वल कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की लोथ पड़ी थी।
- 13 उन्होंने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? उस ने उन से कहा, वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है।
- 14 यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है।
- 17 यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं।

11. रोमियो 13: 11 (अभी), 12

- 11 ... अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।
- 12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।

12. 1 कुरिन्थियों 15: 55-58

- 55 हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?
- 56 हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है।
- 57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।
- 58 सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 246 : 27-31

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है। आइए फिर हम उम्र और तुषार के बजाय अपने अस्तित्व के विचारों को प्रेम, ताजगी और निरंतरता में आकार दें।

2. 25 : 13-16, 22-26

यीशु ने प्रदर्शन के द्वारा जीवन का मार्ग सिखाया, कि हम समझ सकते हैं कि यह दिव्य सिद्धांत कैसे बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को जन्म देता है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है।

यद्यपि पाप और बीमारी पर अपने नियंत्रण का प्रदर्शन, किसी भी तरह से महान शिक्षक ने दूसरों को अपने स्वयं के पवित्रता के अपेक्षित प्रमाण देने से राहत नहीं दी। उन्होंने उनके मार्गदर्शन के लिए काम किया, ताकि वे इस शक्ति का प्रदर्शन कर सकें, जैसा कि उन्होंने किया और इसके दिव्य सिद्धांत को समझा।

3. 429 : 31-12

यीशु ने कहा (यूहन्ना 8: 51), "यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" यह कथन आध्यात्मिक जीवन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अस्तित्व की सभी घटनाएं शामिल हैं। यीशु ने यह प्रदर्शित किया, मरते हुए और मृतकों को ऊपर उठाते हुए। नश्वर मन को त्रुटि के साथ भाग लेना चाहिए, अपने कर्मों से खुद को दूर करना चाहिए, और अमर आदर्श मर्दानगी, मसीह आदर्श दिखाई देगा। विश्वास को अपनी सीमाओं को बढ़ाना चाहिए और पदार्थ के बजाय आत्मा पर आराम करके अपने आधार को मजबूत करना चाहिए। जब मनुष्य मृत्यु पर अपना विश्वास छोड़ देता है, तो वह ईश्वर, जीवन और प्रेम की ओर अधिक तेजी से आगे बढ़ेगा। बीमारी और मृत्यु में विश्वास, निश्चित रूप से पाप में विश्वास के रूप में, जीवन और स्वास्थ्य की सही भावना को बंद करने के लिए जाता है। मानव जाति विज्ञान के इस महान तथ्य को कब जगाएगी?

4. 42 : 5-8, 15-18, 24-28

मृत्यु में सार्वभौमिक विश्वास का कोई फायदा नहीं है। यह जीवन या सत्य को स्पष्ट नहीं कर सकता। मृत्यु को एक नश्वर सपना माना जाएगा, जो अंधेरे में आता है और प्रकाश के साथ गायब हो जाता है।

ईश्वर की शक्ति के महान प्रदर्शनकारी का पुनरुत्थान शरीर और पदार्थ पर उसकी अंतिम विजय का प्रमाण था, और ईश्वरीय विज्ञान का पूर्ण प्रमाण दिया, - साक्ष्यों के लिए इतना महत्वपूर्ण है। ... पुरुषों को लगता है कि उन्होंने शरीर को मार डाला! बाद में वह इसे उन्हें अपरिवर्तित दिखाएगा। यह दर्शाता है कि ईसाई विज्ञान में सच्चा मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित है - अच्छाई से, बुराई से नहीं - और इसलिए वह नश्वर नहीं बल्कि अमर है।

5. 46 : 20-24

यीशु की मृत्यु के बाद लगने वाली शारीरिक स्थिति सभी भौतिक स्थितियों से ऊपर होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई, और इस अतिशयोक्ति ने उसके उदगम की व्याख्या की, और कब्र से परे एक परिवीक्षाधीन और प्रगतिशील राज्य का खुलासा किया।

6. 77 : 5-11, 13-18

जब तक अस्तित्व का विज्ञान नहीं पहुंच जाता, तब तक अस्तित्व भौतिक बोध का विश्वास बना रहता है। त्रुटि अपने स्वयं के विनाश को यहाँ और उसके बाद दोनों में लाती है, क्योंकि नश्वर मन अपनी भौतिक स्थितियों स्वयं बनाता है। जीवन के आध्यात्मिक बोध तक पहुंचने तक मृत्यु इस तरह अस्तित्व के अगले तल पर घटित होगी।

भौतिक जीवन के इस सपने के लिए आवश्यक अवधि, अपने तथाकथित सुख और पीड़ा को गले लगाते हुए, चेतना से गायब होने के लिए, "कोई आदमी नहीं जानता ... न ही पुत्र, लेकिन पिता।" त्रुटि की दृढ़ता के अनुसार यह अवधि लंबी या छोटी अवधि की होगी।

7. 296: 4-9 (प्रति 2nd.)

प्रगति अनुभव से पैदा होती है। यह नश्वर मनुष्य का पकना है, जिसके माध्यम से नश्वर को अमर के लिए गिरा दिया जाता है। या तो यहां या उसके बाद, पीड़ित या विज्ञान को जीवन और मन के बारे में सभी भ्रमों को नष्ट करना होगा, और भौतिक भावना और स्वयं को पुनः उत्पन्न करना होगा। अपने कर्मों के साथ पुरानी मानवता को बंद करना होगा।

8. 324 : 7-18

जब तक मनुष्य की सामंजस्य और अमरता अधिक स्पष्ट नहीं होती, हम परमेश्वर के सच्चे विचार को प्राप्त नहीं कर रहे हैं; और शरीर प्रतिबिंबित करेगा कि यह क्या नियंत्रित करता है, चाहे वह सत्य हो या त्रुटि, समझ या विश्वास, आत्मा या मामला। इसलिए "अब उसके साथ परिचित हो जाओ, और शांति से रहो।" चौकस, शांत और सतर्क रहें। जिस मार्ग से यह समझ पैदा होती है कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है, सीधा और संकीर्ण है। यह मांस के साथ एक युद्ध है, जिसमें हमें पाप, बीमारी, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, या तो इसके बाद, या - निश्चित रूप से इससे पहले कि हम आत्मा के लक्ष्य तक पहुँच सकें, या परमेश्वर में जीवन पा सकें।

9. 76 : 22-31

पाप रहित आनन्द, - जीवन की पूर्ण सद्भाव और अमरता, एक दिव्य सुख या पीड़ा के बिना असीमित दिव्य सौंदर्य और अच्छाई का होना, - एकमात्र सत्य, अविनाशी पुरुष का निर्माण करता है, जिसका अस्तित्व आध्यात्मिक है। अस्तित्व की यह स्थिति वैज्ञानिक और अक्षुण्ण है, - एक पूर्णता केवल उन लोगों द्वारा समझ में आती है जिनके पास दिव्य विज्ञान में मसीह की अंतिम समझ है। मृत्यु कभी अस्तित्व की इस स्थिति को जल्दबाजी नहीं कर सकती, क्योंकि अमरता प्रकट होने से पहले मृत्यु को दूर करना होगा, प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

10. 409 : 27-3

हमें यह कहने का कोई अधिकार नहीं है कि जीवन अब बात पर निर्भर करता है, लेकिन मृत्यु के बाद उस पर निर्भर नहीं होगा। हम जीवन के विज्ञान की अज्ञानता में अपने दिन यहां नहीं बिता सकते हैं, और इस अज्ञानता के लिए गंभीर पुरस्कार से परे खोजने की उम्मीद करते हैं। मृत्यु हमें अज्ञानता के लिए एक सामंजस्य के रूप में सामंजस्यपूर्ण और अमर नहीं बनाएगी। अगर यहाँ हम क्राइस्टियन साइंस को कोई ध्यान नहीं देते हैं, जो आध्यात्मिक और शाश्वत है, तो हम इसके बाद आध्यात्मिक जीवन के लिए तैयार नहीं होंगे।

11. 290 : 23-27

वह पाप और त्रुटि जो हमें मृत्यु के तुरंत बाद प्राप्त होती है, उस क्षण में समाप्त नहीं होती है, लेकिन इन त्रुटियों की मृत्यु तक होती है। पूर्ण आध्यात्मिक होने के लिए, मनुष्य को पाप रहित होना चाहिए, और वह पूर्णता तक पहुँचने पर ही इस प्रकार बनता है।

12. 291 : 12-18

सार्वभौमिक मुक्ति प्रगति और परिवीक्षा पर टिकी हुई है, और उनके बिना अप्राप्य है। स्वर्ग एक स्थानीयता नहीं है, बल्कि मन की एक दिव्य स्थिति है जिसमें मन की सभी अभिव्यक्तियाँ सामंजस्यपूर्ण और अमर हैं, क्योंकि पाप नहीं है और मनुष्य अपने स्वयं के धार्मिकता नहीं पा रहा है, लेकिन "प्रभु के मन", जैसा कि शास्त्र कहता है।

13. 426 : 16-22

जब यह जान लिया जाता है कि बीमारी जीवन को नष्ट नहीं कर सकती है, और मृत्यु से पाप या बीमारी से मृत्यु को बचाया नहीं जाता है, तो यह समझ जीवन के नएपन में तब्दील हो जाएगी। यह या तो मरने या कब्र से डरने की इच्छा में महारत हासिल करेगा, और इस तरह नश्वर अस्तित्व को नष्ट करने वाले महान भय को नष्ट कर देगा।

14. 492 : 7-12

पवित्र होना, समरसता, अमरता है। यह पहले से ही साबित हो गया है कि इस का ज्ञान, यहां तक कि छोटी सी डिग्री में, नश्वर लोगों के भौतिक और नैतिक स्तर को ऊपर उठाएगा, दीर्घायु को बढ़ाएगा, चरित्र को शुद्ध और ऊंचा करेगा। इस प्रकार प्रगति अंततः सभी त्रुटि को नष्ट कर देगी, और अमरता को प्रकाश में लाएगी।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6